Riyasat IAS Mentorship

Secure Prelims Program 2026

English - हिंदी माध्यम

AN INITIATIVE UNDER RIYASAT IAS MENTORSHIP

Shaping Potential Into Performance

Riyasat Ali Sir

IAS Mentor Since 2011

INTENSIVE & INTERATED

Prelims GS & CSAT PROGRAM

to Crack CSE 2026

भूगोल डेमो नोट्स - हिंदी मीडियम

More Information: 8090528260, 9319612575, 9266989092

प्राकृतिक वनस्पति

प्राकृतिक वनस्पति:

- प्राकृतिक वनस्पति उस पादप समुदाय को कहा जाता है, जो **स्वाभाविक रूप से मानव सहायता के बिना उगा हो** और जिसे लंबे समय तक मानव द्वारा अप्रभावित छोड़ा गया हो। इसे ही **वर्जिन वेजिटेशन** कहा जाता है। इस प्रकार, उगाई गई फसलें, फल और बगीचे वनस्पति का हिस्सा तो हैं, लेकिन प्राकृतिक वनस्पति का हिस्सा नहीं हैं।
- हमारा देश **भारत विश्व के 12 मेगा जैव-विविधता वाले देशों में से एक** है। लगभग **47,000 पादप प्रजातियों** के साथ भारत पौधों की विविधता में विश्व में दसवें और एशिया में चौथे स्थान पर है।
- वर्जिन वेजिटेशन, जो पूरी तरह भारतीय हैं, उन्हें **एंडेमिक या इंडिजिनस स्पीशीज** कहा जाता है, लेकिन जो भारत के बाहर से आए हैं उन्हें एक्ज़ॉटिक प्लांट्स कहा जाता है।

प्राकृतिक वनस्पति को निर्धारित करने वाले कारक:

- **तापमान और आर्द्रता:** उच्च तापमान और अधिक आर्द्रता वाला क्षेत्र सदाबहार वनों को समर्थन करता है, जबकि उच्च तापमान और कम आर्द्रता वाला क्षेत्र कांटेदार झाड़ियों (मरुस्थल) को समर्थन करता है।
- **वर्षा: अधिक वर्षा** वाले क्षेत्रों में कम वर्षा वाले क्षेत्रों की तुलना में **अधिक सघन** वनस्पति होती है।
- **सूर्य प्रकाश:** ग्रीष्म ऋतु में लंबे समय तक **सूर्य प्रकाश मिलने के कारण पेड़ तेजी से बढ़ते हैं**।
- **ऊँचाई/अक्षांश:** जैसे-जैसे ऊँचाई या अक्षांश बढ़ता है, हम देखते हैं कि वनस्पति बदलती जाती है और अंततः कम होती जाती है।
- **भूमि:** पर्वतीय क्षेत्रों की **वनस्पति पठारी और मैदानी क्षेत्रों की वनस्पति से भिन्न** होती है।

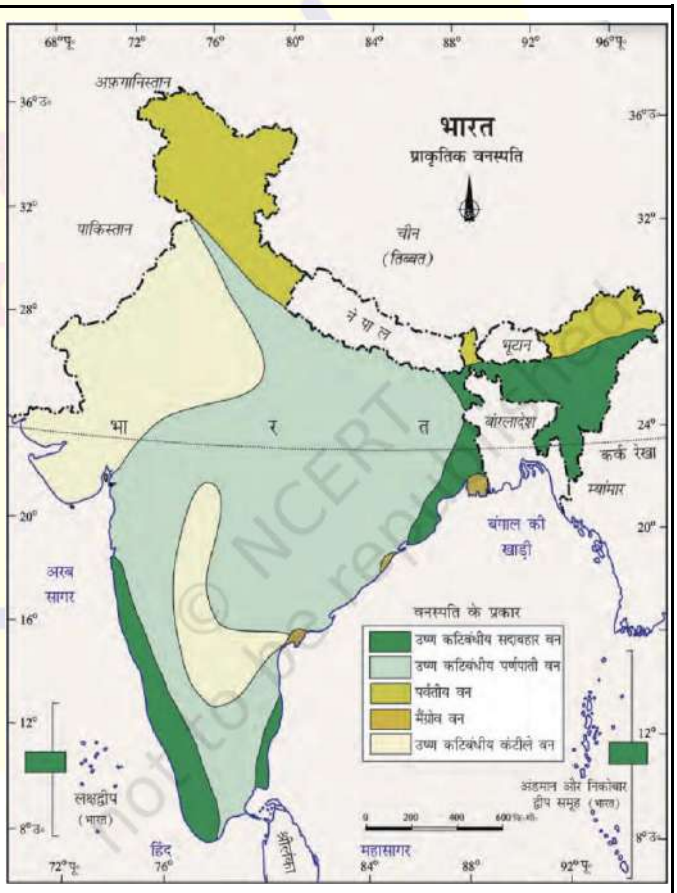

- **मिट्टी:** मरुस्थल की रेतीली मिट्टियाँ कैक्टस और कांटेदार झाड़ियों का समर्थन करती हैं, जबकि आर्द्र, दलदली, डेल्टाई मिट्टियाँ मैंग्रोव और डेल्टाई वनस्पति का समर्थन करती हैं।

प्राकृतिक वनस्पति के प्रकार:

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन:

- **भौगोलिक वितरण:** पश्चिमी घाट के अधिक वर्षा वाले क्षेत्र तथा लक्षद्वीप, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, असम के ऊपरी भाग और तमिलनाडु तट।
- **जलवायु स्थिति:** अधिक वर्षा: 200 सेमी वर्षा + छोटा शुष्क मौसम + तापमान: **22°C**।

विशेषताएँ:

- **सूर्य प्रकाश नहीं:** ये इतने सघन होते हैं कि सूर्य का प्रकाश भूमि तक नहीं पहुँचता।
- **वृक्षों की ऊँचाई:** 60 मीटर या उससे अधिक तक।

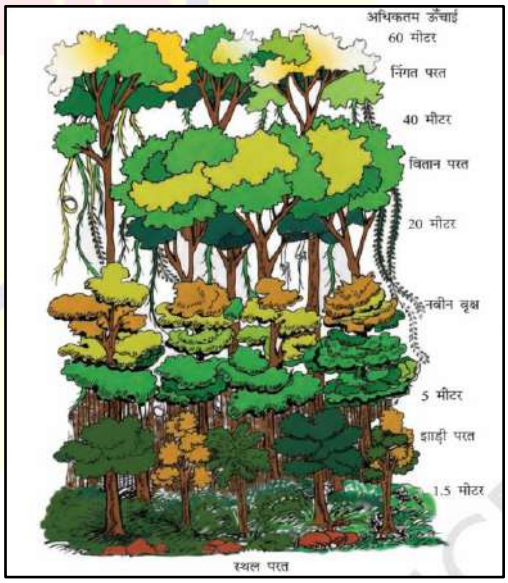

	• **स्तरित वन:** उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन अच्छी तरह स्तरित होते हैं। • **वस्पति विविधता:** सभी प्रकार की घनी वनस्पति – पेड़, झाड़ियाँ और बेलें, जो इन्हें बहु-स्तरीय संरचना प्रदान करती हैं। • **सदाबहार:** वृक्षों के पत्ते झाड़ने का कोई निश्चित समय नहीं होता। इस प्रकार, ये वन पूरे वर्ष हरे दिखाई देते हैं। • **महत्वपूर्ण वृक्ष:** आबनूस, महोगनी, रोज़वुड, रबर और सिनकोना। • **जन्तु:** हाथी, बंदर, लीमर और हिरण। एक सींग वाला गैंडा।	
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन: 	• **विशेषताएँ:** भारत के **सबसे व्यापक रूप से पाए जाने वाले वन**। इन्हें **मानसूनी वन** भी कहा जाता है। ये अपेक्षाकृत कम सघन होते हैं। ये वर्ष के एक विशेष समय पर अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। • **वृक्ष:** साल, सागौन (टीक), पीपल, नीम और शीशम। • **भौगोलिक वितरण:** मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिशा और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से। • **जलवायु स्थिति:** वर्षा 200 सेमी से 70 सेमी के बीच। • **जन्तु:** सिंह, बाघ, सूअर, हिरण और हाथी।	 चित्र 5.3: उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन

उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन और झाड़ियाँ:

- **वर्षा: 70 सेमी से कम**, प्राकृतिक वनस्पति में कांटेदार पेड़ और झाड़ियाँ शामिल होती हैं।
- **भौगोलिक वितरण:** गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश और हरियाणा।

विशेषताएँ:

- पेड़ इधर-उधर बिखरे होते हैं और नमी प्राप्त करने के लिए उनकी **लंबी जड़ें मिट्टी में गहराई** तक जाती हैं।
- **तने रसीले (succulent)** होते हैं ताकि पानी संचित किया जा सके।
- **पत्तियाँ अधिकतर मोटी और छोटी** होती हैं जिससे वाष्पीकरण कम हो।
- पौधे वर्ष के अधिकांश समय पत्तों से रहित रहते हैं और झाड़ीदार वनस्पति का रूप देते हैं।

वनस्पति और जीव-जंतु:

- **पशु प्रजातियाँ:** चूहे, मूषक, खरगोश, लोमड़ी, भेड़िया, बाघ, सिंह, जंगली गधा, घोड़े और ऊँट।
- **वृक्ष प्रजातियाँ:** बबूल, खजूर, यूफोर्बिया, कैक्टस, बेर, जंगली खजूर का पेड़, खैर, नीम, खेजड़ी, पलाश।
- **घास:** गुच्छेदार (tussocky) घास 2 मीटर तक ऊँची उगती है और अधोविकास (under growth) बनाती है।

पर्वतीय वन :

- **ऊँचाई बढ़ने पर तापमान में कमी के कारण** प्राकृतिक वनस्पति में भी परिवर्तन होता है।

आल्पाइन वनस्पति:	• सिल्वर फर, जुनिपर, चीड़, भोजपत्र और रोडोडेंड्रोन इन हैं। • हालाँकि, जैसे-जैसे ये **बर्फ़ रेखा (snow line) के नि वृद्धि धीरे-धीरे बौनी (stunted)** होती जाती है।
आल्पाइन घासभूमि:	• अंततः **झाड़ियों** और **कांटेदार पौधों** के माध्यम से ये **आ** मिल जाती हैं। • इनका व्यापक रूप से **चराई** एवं **घुमंतू जनजातियों** जै **भोटिया** और **गद्दी** द्वारा **ऋतु-आधारित स्थानांतरण (tr** उपयोग किया जाता है।
टुंड्रा वनस्पति:	• **ऊँचाई वाले क्षेत्रों** में **काई (mosses)** और **लाइ वनस्पति** का हिस्सा बनते हैं।

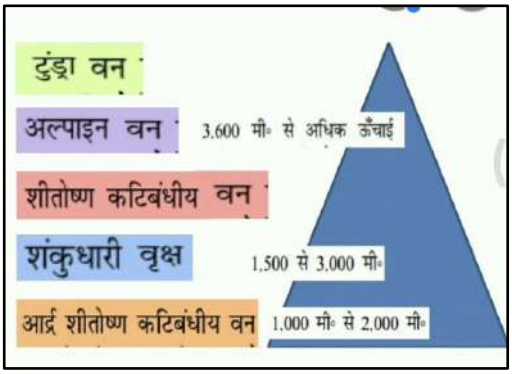

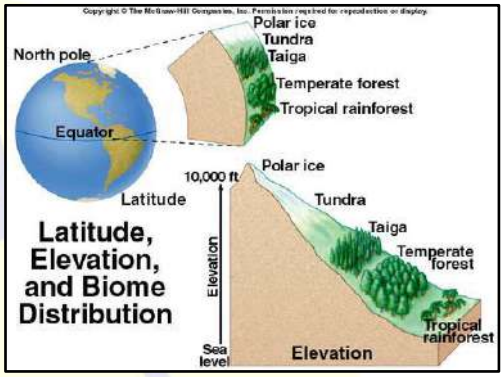

- **जन्तु:** कश्मीर हिरन, चीतल (spotted deer), जंगली भेड़, जैकरैबिट, तिब्बती मृग, याक, हिम तेंदुआ, गिलहरियाँ, झबरीले सींग वाला जंगली आइबेक्स, भालू और दुर्लभ लाल पांडा, मोटे बालों वाली भेड़ और बकरियाँ।
- **दक्षिणी पर्वतीय वन:** प्रायद्वीपीय भारत के तीन विशिष्ट क्षेत्रों में पाए जाते हैं – **पश्चिमी घाट, विन्ध्य और नीलगिरी**। ये वन **पश्चिमी घाट** के निचले क्षेत्रों, विशेषकर **केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक** में उपोष्णकटिबंधीय होते हैं।
- **शोला वन (Sholas Forests):** नीलगिरी, अनैमलाई और पलनी की पहाड़ियों में समशीतोष्ण वनों को शोला कहा जाता है। ये **सतपुड़ा और मैकाल पर्वतमाला** में भी पाए जाते हैं।
- **वृक्ष: मैग्नोलिया, लॉरेल, सिनकोना और वेटल (wattle)**।

मैंग्रोव वन :

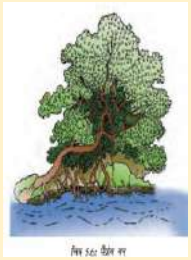

- **स्थिति:** ऐसे तटीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं जो ज्वार-भाटा (tides) से प्रभावित होते हैं। इन तटों पर **कीचड़ और गाद** (mud and silt) जमा होती है + पौधों की **जड़ें पानी में डूबी रहती हैं**।
- **क्षेत्र: गंगा, महानदी, कृष्णा, गोदावरी और कावेरी** के डेल्टा क्षेत्र।
- **वृक्ष: सुंदरी वृक्ष, पाम, नारियल, केओरा, अगर।**
- **जन्तु: रॉयल बंगाल टाइगर, कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल और साँप।**
- **विशेष तथ्य:** मैंग्रोव वन **6,740 वर्ग किमी** में फैले हैं जो विश्व के मैंग्रोव वनों का **7%** है।
- ये सबसे अधिक विकसित हैं **अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह** तथा **पश्चिम बंगाल के सुंदरबन** में।

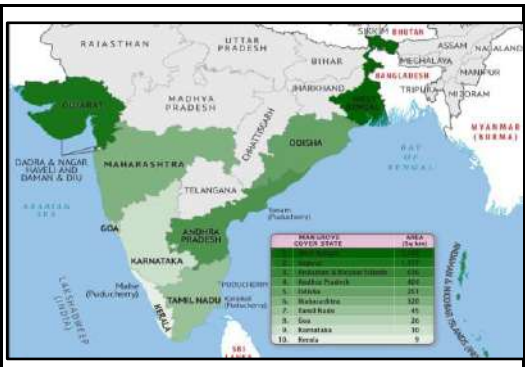

भारत में वन आवरण: India State of Forest Report (ISFR) - 2023

- **कुल वन और वृक्ष आवरण:** 25.17%
  - **वन आवरण (Forest cover):** 21.76%
  - **वृक्ष आवरण (Tree cover):** 3.41%
- **सबसे बड़ा वन आवरण (क्षेत्र के हिसाब से): मध्य प्रदेश > अरुणाचल प्रदेश > छत्तीसगढ़**
- **अधिकतम प्रतिशत वन आवरण: लक्षद्वीप (91.33%), मिजोरम (85.34%), अंडमान और निकोबार (81.62%)**
- **राष्ट्रीय वन नीति, 1988:** देश के भौगोलिक क्षेत्र का **33% वन और वृक्ष आवरण** के अंतर्गत लाना लक्ष्य

- **भारत में सबसे बड़ा वन आवरण (क्षेत्रवार): मध्य प्रदेश > अरुणाचल प्रदेश > छत्तीसगढ़ > ओडिशा > महाराष्ट्र**

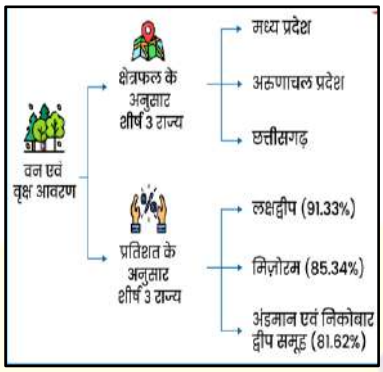

Riyasat IAS Mentorship